

आर्य समाज

ARCHIVES

3015

श्रीमद्भारुचि

ASIA ARCHIVES

3015

[illegible]

स्वॐ सरुॐ ऊतॐ तपॐ सरु॥ ॐ रुद्रुव४ सु४
 ॐ तत्सवि॒तुर्व॒र॒ण्यं॒ रु॒द्रा॒ग्नि॒दे॒व॒स्य॒ धी॒म॒हि॒ धि॒ यो॒
 म॒ १५॒ यो॒ द॒ या॒त॥ अ॒ना॒मी॒रु॒मी॒न॒स्य॒ म॒नु॒॥ ॐ ए॒
 धि॒वी॒म॒ नृ॒ए॒ष॒वे॒ सि॒कृ॒र्म॒द॒व॒ता॒थ॒ नृ॒न्द् आ॒स॒
 न॒ वि॒ति॒ या॒ न॒ उ॒द॒द॒नु॒रु॒ता॒ना॒ ए॒ धि॒वी॒मा॒र्ज॒त॥

अमुखा। प्रभु। गविन्दा॥ श्रीगुरु॥ तर्जुन्यायां महीधरं
॥ तर्जुनी॥ मधुमायां हवीं कर्ण॥ मधुमा॥ अनामिक
मुद्रिविक्रम॥ अनामिका॥ कतिष्ठद्वसद्विष्णु॥ कतिष्ठका
॥ कनमल्लद्वामनं उर्वयः कलैया सजायके। टिगुर्दील
रुत॥ कलतल॥ ॥ अकारवित्यस्य नाहि॥ सत्यरूप

निलैऊन॥ नाहिस॥ ॐ कारद्वदयमधुनऊमा
रुगीय॥ हृदयस॥ मकारीमूर्द्धिकेनवमरूपतत
आत्माधुनाविश्वकर्मसू॥ ॥ तताधुनी॥ ॐ पूर्वा
हृदुसंध्यायां गयतीवकाशीववासमाकमधुनयय
रुकायकीमात्रीवृक्षदवगाहंसवाहनीआयायुव

नदादवा ननक नीउ न्न वादिनी गायत्री श्रुत सामाता
ओंकार लिखाव न्न। एत स आचरु ४। ओंकार व न्न देवता
गायत्री श्रुत सर्व क म्मासि विनियोग ४॥ आचम्य ॥ ॐ रु
र्ग्यदादि ॥ ॐ वाक्या। एति ॥ ॐ रुद या यन म ४॥ ॐ नि
व स त म ४॥ ॐ निखाये न म ४॥ ॐ क व या यन म ४॥ ॐ न यो

ॐ रु विनि न्या सादि ॥ २

यानि म ४॥ ॐ अ सु या यन म ४॥ प्राण याम ॥ ॐ का न व न्न म्
विप्र जायति देवता प्राण याम मिति ॥ ॐ रु ४ ॐ रु व ४ ॐ रुः
ॐ म रु ॐ ऊ न ॐ न प ॐ म रु ४॥ ॐ रु रु व ४ रु ४ ॐ त न
वि रु र्व र्व रु ४। न्त द व रु धी म रु विधिया यान ४ प्र वा द
या न् ॥ ॐ रु रु व ४ रु ४ इ प्राण याम विनियोग ४॥ आ

कार्त्तिक ३

पामानी॥ॐ सूर्यश्चामान्यश्चमन्यपमंश्चमन्यक
मंश्चश्चपापंश्चानकनीयडाशायापमका
लिखंमनसावाचारुकास्यांपश्यांमूयनमनि
वसाश्रुहावायिस्तदवलीयतुयत्किंचिद्विनि
ममयि॥ॐ दंमामंमृतीयातीसूर्याक्षितिविश
महंमा

हामिस्वाहा॥प्रिवाली॥ॐ हःॐ वःॐ वःॐ वःॐ
महंॐ जनॐ तपॐ सत्यं॥ॐ हं वःॐ वःॐ वःॐ वःॐ
सिवनी॥ॐ आधाहिष्टामथागुवस्तानडुर्द्धदध
तनःमहंलनायवकस।यावःॐ वःॐ वःॐ वःॐ वःॐ
सुस्यराजयतंरुन॥ॐ वःॐ वःॐ वःॐ वःॐ वःॐ

अलंगमासवायकयायजित्वथाआपोजनयथा
वनशा॥ॐमृत्पुंयसर्पवालीदातपसाधुजायत
४ततोनायावजायत४तत४समूडादुर्लुव४समूः
डादुर्लुवादधीसन्वत्सवासिअजायत४अहो॥
नायासिविदधद्विष्टस्यमूषतोवसीसूर्यचन्द्रमसी

भगपूर्वमकल्पयद्विर्वचपृथिवीयान्तलीकमाथ
स४॥॥उपस्यगति॥तर्पन४॥ॐअग्निदेवतायनः
म४॥ॐवातादेवतायनम४॥ॐचन्द्रमादेवताय
नम४॥ॐसूर्यादेवतायनम४॥ॐवृषादेवता
यनम४॥ॐॐब्रूडादेवतायनम४॥ॐदित्यादेव

जनयन्त्यवयवकः॥ आर्यम्॥ ॐ ह्रस्वम्॥ च दा यति॥
उयस्यर्जनी॥ ॥ ततो तनु सैध्मया य॥ आर्यम्॥ ॐ
क्रां आत्मतत्वाय स्वाहा॥ ॐ ह्रस्वम्॥ विद्यातत्वाय स्वाहा॥
ॐ क्रां निवतत्वाय स्वाहा॥ ॐ ह्रस्वम्॥ अस्त्राय रुद्र॥ न्याः
म॥ ह्रस्वम्॥ अस्त्राय नमः॥ अनामिकायुषे न ह्रस्वम्॥ ॐ

ह्रस्वम्॥ ॐ ह्रां सिंहाय नमः॥ ३
ह्रस्वम्॥ ॐ ह्रां सिंहाय नमः॥ केनीं न्याम॥
क्रां ह्रदयाय नमः॥ क्रां निलस्य नमः॥ ह्रस्वम्॥ निखाये न
मः॥ ह्रस्वम्॥ कवचाय नमः॥ ह्रस्वम्॥ अस्त्राय नमः॥ ह्रस्वम्॥ दहं न्या
म॥ क्रां ह्रदयादि॥ उदके पायं जलं पिबेत्॥ क्रां ह्र
दयादि॥ वामकं प्रजापते॥ ह्रस्वम्॥ अस्त्राय नमः॥ १०॥ आर्य

म्या॥ न्यास॥ काँ हृदयादि॥ वामहस्तं कर्तुं निधाय॥
काँ हृदयादि॥ तस्य ऊर्ध्वतलजिलसी सिंघने चिवाचं॥
तस्य ऊर्ध्वतलसी निधाय॥ ततो ध्यात्वा॥ ॐ नमो भगवते
वामनाय॥ अथ यज्ञोपवीतिनी हंसपद्मासना
वालां चतुर्वक्त्राश्चतुर्भुजां ध्रुवाक्षमालिनी दक्ष

वामदक्षकमधुल्लवाक्षीमस्तुभं ध्यात्वा तस्या
वक्त्रं विली॥ हाँ हाँ सदाजिवाय नमः॥ १०॥ ऊर्ध्वतल
सी निधाय॥ ॐ दक्षाय नमः॥ ॐ रुद्राय नमः॥
ॐ विष्णवे नमः॥ अथ न्यासः॥ ॐ काँ आत्मतत्वा
यति॥ ॐ तितिलुसन्ध्याविधिः॥ ॥ उपस्यन्ति ॥

म्या॥ न्यास॥ क्रां हृदयादि॥ वामहस्तं कुलीनिधाय॥
क्रां हृदयादि॥ तस्य कुलीनजिलसी सिंघनं विवात्री॥
तस्य कुलीनसो निधाय॥ ततो ध्यात॥ ॥ उं न कस्त
षास्व वा न कां जटा यज्ञाय वीतिनी हं सपद्मासना
वालां यदुर्वक्राश्चुर्दुर्जां प्रवादामालिनी दक्ष

वामदक्षकमधुल्लुवा श्रीमहर्षिं ध्यायन् प्रातश्चा
नक्तं विली॥ हां हां सदा विवायनम॥ १०॥ कुलीन
सो निधाय॥ उं द वर्यः स्वाहा॥ उं रुतं र्यः स्वाहा॥
उं विष्णवे र्यः स्वाहा॥ अर्वम्या॥ उं क्रां आत्मनत्वा
थति॥ ॐ निते तनु सन्ध्या विधिः॥ ॥ उपस्यन्ति ॥

आर्वम॥ॐ रुम। ग्व दाय स्वा हा॥ॐ रुव य इ व
दाय स्वा हा॥ॐ रुमाम वं दाय स्वा हा॥ॐ रुव व
स्व॥ अथर्व वं दाय स्वा हा॥ॐ वा के प्रा ध न रु। अ
पे उ। अ व ली॥ॐ रुॐ रुवॐ रुॐ म रुॐ रु नॐ
तपॐ म रु॥ॐ रुव॥ स्व॥ॐ न स वि रु व न ल्य

रु। अ द व स्य धी म रु धि या या न॥ अ वा द या न॥ अ न
मी रु मी रु। अ न॥ॐ ए धि वी म रु ए रु न सि रु म रु दः
व गा थ न धु न्द आ स न वि ति या ग उ द द न्द रु ह ता नीः
ए धि वी मा रु न॥ अं रु रु। अ रु। अ वि न्द॥ॐ रु न्या
यी म रु ध न॥ म ध्व मा यी रु सी क र्णी॥ अ न मि क रुः

प्रिविकर्म॥ कनिष्ठद्वसंदिष्ट॥ कनम (अथु वासनी॥
प्रवेय ४ कलैया संजाय कोटिगुलं लरुत॥ सत्यनूः
पनिलं ठन ४॥ उं कारं ददय मध्वन जा मोरु तीयी॥
मकारं मूर्द्धिकं नव न्नरुप तत आत्मा आत्मा विधु क
र्मस॥ ततो ध्यान॥ ॥ उं मध्वन द्गु संध्या यी सावि

प्रिष्टकामिष्टुक् वाससा कमलुलुखन ह कारकोमा
नी नूड दव ल्या वृषवाह नी आया नु वन दा दवी नः
नक्षत्र वाक्क वाय नी सावित्री धु न्द सामा गो उं कार
जिखा नूड दल सा आव रु ४ उं कार नूड दव ता सावित्री
धु न्द सर्व कर्म विवितिया ग ४॥ आचम्या ॥ उं रु सान्व

दति॥ न्यास॥ प्राणायाम॥ ॐ कारवृक्षपृथिव्याय
तिर्देवताप्राणायामति॥ ॐ रुद्रित्ति॥ आयासान्नी॥
ॐ आपः पूनन्तु पृथिवी पूतायूना तु मां पूनन्तु वृक्ष
स्यतिर्वृक्ष पूतायूना मां । यद्रुद्रिर्हं मरुतां यद्रु
द्रिर्हं मम तत्सर्वं पूनन्तु मा माया सताश्रयतिग्रः

हिर्हं स्वाहा॥ ३॥ ॐ रुद्रित्ति॥ सिञ्चनी॥ ॐ आपादिषु
ति॥ नासायूकृषी॥ ॐ मृत्तमस्यमति॥ उपस्यर्जनी
॥ तर्पणी॥ ॐ अग्निर्देवतायति॥ उत्कानी॥ ॐ उद्रु
त्तं जातवदगमिति॥ ॐ विप्रन्दवानामिति॥ सूर्य
उपकानी॥ ॐ आरुषूति॥ ॐ वाग्यालति॥ गायत्री

जाय ॥ १० ॥ उपविश्या ॥ ॐ विश्वतश्चक्र ॥ आचम्या ॥ ॐ
रुद्रा न्वदति ॥ उपसर्जनं ॥ ॥ ततो तनुसंभ्रा ॥
आचम्या ॥ ॐ क्रां आत्मतत्त्वादि ॥ ३ ॥ न्यासा ॥ रुद्रा
यरुद्र ॥ ॐ हां सिंहसनाय नमः ॥ ॐ क्रां हृदयायति
॥ करीनी न्यासा ॥ क्रां हृदयायति ॥ अंगी न्यासा ॥ प्रालम्बा

म ॥ पूर्वक्रमः ॥ * ॥ ततो ध्यान ॥ ॐ शुक्रास्त्रधर्मिणु
क्रास्त्रनमालोपवातिनी ॥ तार्क्यप्राप्तोसीतामूहि
न्ननवजीवनी ॥ लंखचक्रधरावामदक्रि (सगदा
रुया ॥ अथ सध्मा न्दि नदवी वैष्णवी सर्वरुषणां ॥ हां
हां सदागवाय नमः ॥ १० ॥ ॐ दवयः स्वाहा ॥ ॐ रुद्र

आवह॥ आवम॥ ॐ ह्रस्वदायनि॥ ॥ दवतर्क
 लीजलन॥ ॐ क्रीं क्रीं सूर्याय नमः॥ जाया॥ १०॥ ॐ क्रीं
 सनमाता नारायणाय विश्वत्मने नमः॥ १०॥ ॐ ह्रीं ह्रीं स
 दागिवाय नमः॥ १०॥ ॐ ह्रीं ग॥ श्री गीर्वाणाय नमः॥
 १०॥ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं लिखाय शुद्धमहादेव वाय नमः॥

१०॥ अथात्र कांथधात्र कांथात्रमूर्तेरुं सर्वत
सर्वत कांथं स० नमस्तुते नमस्तुते नमस्तुते ॥ ८॥ ॐ नमः
कांकां संकां कांकां ॥ जाया ॥ १०॥ वाला
दीपनी ॥ ॐ नमः कांकां सावसत्वाय नमः ॥ १०॥ ॐ
पूली ॥ अथवा ॥ ॐ नमः ॥ नवदायति ॥ ॐ नमः

नी ॥ ॐ नमः काय नमः ॥ ॐ नमः यदीनमः ॥ ॐ नमः का
य नमः ॥ ॐ नमः सावित्री नमः ॥ ॐ नमः सर्वथा दवथा
नमः ॥ ॐ नमः सावित्री नमः ॥ ॐ नमः सावित्री नमः
॥ ॐ नमः सावित्री नमः ॥ ॐ नमः सावित्री नमः
यथादि ॥ न्यासादि पूर्ववत् ॥ नमः ॥ ॐ नमः

प्राङ्कुसुमस्यैवायं सवस्वतीरुष्मासीरुष्मवाप्तसार्ग
स्ववक्रगदाहस्ता कोमोनीविष्णुदेवतागन्तुवाह
नी आयातुवनदादेवीरुवद्वनत्रुम्बवादनीसः
नस्वतीश्रुत्तसामागा। उँ काललिखाकृष्णनसा
आवह॥ उँ कालरुष्मदेवतासवस्वतीश्रुत्तसर्व

कर्मानिविनिर्माण॥ आवम्या॥ उँ ह॥ अ॥ ग्वदायं
ति॥ वाग्प्राप्त्यादि॥ न्यासा॥ उँ ह॥ विनि॥ उँ ह॥ दया
यति॥ प्राप्तायाम॥ उँ कात्रवक्रुम्बविप्रजापतिवि
त्यादि॥ आपासानी॥ उँ अ॥ निश्चमामन्यश्चमन्यूपनः
यश्चमन्यूरुगैर्य॥ पायैर्यात्रकृतायदकापापम

कार्यमनसावाचाह साखीयद्या मूदल्लेखिबुध
 हतदवलीययुयत्किञ्चिद्वितीमयि००० दं मासमृत
 यानोसत्यैतिषिइहामिसोहा॥३॥ **आचम्य**॥ॐ
 हविनि॥ॐ हवुव० स०ॐ नत्सविमुच्चति॥सिंचनी॥
 ॐ आयाहिष्ठति॥ॐ यावजिव० नमा॥ॐ नस्माश्रुः

वसमा॥नामसूक्तं॥ॐ मृत्युं सत्यं वाही द्वातयंति॥
 ३॥उपस्यर्जनी॥तर्प्यं॥ॐ अग्निद्वेतायत्यादि॥उक्त
 नी॥ॐ उद्रत्यं जातवदति॥ॐ विप्रन्दवानामिति॥ॐ
 वाग्प्राप्त्यादि॥गययी॥जायधव॥१०॥ॐ विश्वतश्च
 कृता॥**आचम्य**॥ॐ हवु। न्वदायंति॥उपस्यर्जनी॥

अथतनुसंध्या॥आचम्या॥ॐ क्रां आत्मतुल्ययति॥
न्यासादि॥प्राणायामंति॥ततो ध्यानं॥ॐ नीलोत्प
लदवाहासाकिश्चिलितयोवनां।सुपुङ्गुजा
जिनं प्राश्नयतास्व।बुद्धमस्मिता।विष्णुलाक्ष्मणा
दक्षवामं सां रुयं गच्छिष्यामि॥

काले द्वास्तु सितान्।रुद्रं जिनं धनं सर्वं॥सा
कं च॥सर्वं कर्म क्षमा॥ॐ ह्रीं ह्रीं सदा लवाय न
मः॥॥ॐ दक्षयत्यादि॥आचम्या॥ॐ क्रां आः
त्मतुल्यदि॥उपस्थगर्जनी॥आचम्या॥ॐ ह्रीं ह्रीं
दादि॥वाग्प्राणति॥न्यासादि॥ॐ ह्रीं विनि॥ ॥

ॐ पूर्वाक्षरं नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥
ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥
ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥
ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥

ॐ नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥
ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥
ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥
ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥ ॐ सन्ध्याय नमः ॥

वस्वः कालनीलिखायै वीषट् ॥ कंकवचायै
॥ ओं नमः प्रयाय वषट् ॥ नं ओं शाय रुट् ॥ ॥
ॐ श्रुयादि ॥ ॐ सूर्य विष्णु सदाजिबलिमात्रे
ननिमित्तार्थकं किं श्री सूर्याय श्रुयन्मम ॥ ॐ
श्रुष्टुक्ति ॥ पूषा नमः ॥ ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

कं स्वान्तं ॥ मधुलं कं तन्ने ॥ ॐ गुणवन्तमम ॥ ॐ
गुणमूर्त्यनमः ॥ ॐ यत्र मधुवन्तमम ॥ मधु
लस बोध स्वान्तनकूय ॥ न्यासयाय ॥ ओं हृदा
यायनमः ॥ ओं ओं जीवसु स्वाहा ॥ हृष्टुवः
स्वः कालनीलिखायै ॥ हं कवचायै ॥

ॐ नमो वायु ^व ॥ त्रैलोक्याय नमः ॥ कर्वांगना
सं॥ अहं दयादि॥ दहं न्यास॥ तं नमस्तुल्यजल
पात्रपूजासंयुक्तं॥ जलपात्रं जलग्रहनी॥
जलपात्रं जलीनिक्षय॥ गायत्रीपथेन॥ ॐ
नमो नूपाय विष्णवे॥ हास्करां सुधीमहि॥ तन्ना
य

सूर्याष्टपञ्चादयात्॥ त्रिवालीव॥ जलन आत्मन
सिद्धिनी॥ आत्मन चन्दनं नमः॥ आत्मन पूर्यं नम
॥ आत्मा सनाय नमः॥ आत्मसूक्तियं नमः॥ ॥
तत्तत्पूजनी॥ ॐ क्रां क्रां सूर्याय नमः॥ त्रिवा
लीव॥ आवाहनादि॥ गायत्रीनमस्तुल्यदयापथेन॥

ॐ नै ऊ नू पाय विमृ हति ॥ वजि ह्वा या स ली ख नै ॥
नै सिम हा दै उ पा ला य नै व श नै म ॥ म धु ल या
य स्वा न नै ॥ ऊँ पौ ॥ ॐ कौं कौं म ॥ सूर्या य म धु ला
य न म ॥ जा प ॥ ॐ कौं कौं म ॥ सूर्या य न म ॥ १०
॥ ऊ प स म र्थ नै ॥ ॐ कौं कौं म ॥ सूर्या य ऊ प स म

र्य या मि ॥ प म मू डा न्द र्ज य त ॥ कौ प ॥ ॐ मा हा
न्ध का ल ति ॥ आ जी र्वा द ॥ ॐ आ रु षू ति ॥ म धु
ल स वा रु स्वा न न कू य ॥ न्या स पू र्व क मै त ॥ अ र्ध
पा उ स वा रु स्वा द व या क नै ॥ ॐ कौं कौं म ॥ सूर्या
य वि श्रा द हा दि रु ॥ क न नै ॥ ॐ कौं कौं म ॥ सूर्या

शायनम॥ विसर्जते॥ ॥ॐ नमो भगवते॥
मृधविष्णुपूजा॥ आवम्या॥ न्याम॥ ॐ नमो वाय
धाय मृधाय रुद्र॥ ॐ क्रो म॥ मृधुषा र्या नम
॥ ॐ क्रो म॥ कर्त्तार्या ॥ ॐ पत्रममधुमा
र्या ॥ ॐ विष्णु तम नमो नामिका र्या ॥ ॐ नमो

कनिष्ठकार्या ॥ ॐ नमो वाय धाय मृधाय रुद्र॥
ॐ क्रो म॥ रुद्राय नमः॥ ॐ क्रो म॥ गिरमः
स्वार्द्रा॥ ॐ पत्रमगिराय वीषट्॥ ॐ विष्णु
तम नमो कवचाय रुद्र॥ ॐ नमो नयदेयाय वीष
ट्॥ ॐ नमो वाय धाय मृधाय रुद्र॥ पूजा॥ ॐ

क्रौं स० नमो नारायणाय विष्णु तनू नमः ॥ ३ ॥
नमः ॥ ॐ क्रौं वासुदेवाय विष्णवे लक्ष्मीया
सायधी म० ह० तन्ना विष्णु यथा दयाता ॥ ॐ नमः
क्रौं विष्णवे नारायण म० ह० क० ५ पालाय नमः ॥
म० ॥ म० तुला ॥ जाय ॥ १० ॥ ॐ क्रौं स० नमो नाराय

णाय विष्णु तनू नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

पूषुनीकनमामुत॥ आनीर्वाह॥ ॐ श्रीसिधदा
॥ ॐ सहस्रनाम॥ ॐ श्रीधुत॥ ॐ वावकान॥
मधुलसबाह स्वानंकुय॥ ॐ कौं स४ नमानावा
यक्षयविष्मत्तनविद्यादहादहा॥ सप्रिदाव
नकारवत्तु॥ न्यासलिकायनासिय॥ उपस्यर्जनी॥

ॐ त्रिविष्णुपूजा॥ ॥ अथशिवपूजा॥ आचम्या॥
ॐ कौं आत्मनवायति॥ न्यास॥ ॐ कौं अमुय
नम४॥ ॐ कौं हृदयाय२॥ ॐ कौं शिवसुखा
हा॥ ॐ कौं शिखाय२॥ ॐ कौं कवचाय२॥ ॐ कौं
नवाय२॥ ॐ कौं अमुय२॥ ॐ कौं सिंहस

नायश॥ॐ कं अक्रायश॥ॐ कौं ह द या य ति॥
जलकमलुलपूजनी॥ॐ कौं ह द या य ति॥ आ
वाहनादि॥ गायत्री॥ॐ तन्महं मायविग्रहं वा
नृवायसूधीमहं॥ तन्नामि वक्ष्ये दयात्॥ कं
अक्रायहं॥ आत्मनसि चनी॥ आत्मनवेन्दनं

॥ आत्मनयूष्यं॥ आत्मा सनायु॥ आत्मसूक्तं
यं॥ ॥ तन्महं पूजनी॥ॐ हौं हौं सदाशिवाय न
मः॥ १॥ आवाहनादि॥ गायत्री॥ अर्थदाययं
नृ॥ॐ तन्महं मायति॥ वक्ति ह्यासलैखनं॥
श्रीकृष्णमहाकृष्णालायनं वक्ष्ये॥ ॥ मृत्युं

ऊयु पूऊनी ॥ ॐ हूं सः अमृतीष्व वायनमः ॥ ३
॥ ॐ हूं सः अमृते लक्ष्मी नमः ॥ आवाहनादि
॥ गायत्री ॥ ॐ हूं सः अमृतीष्व वायवि प्रहं मृष्ट
अयाय सुधीमहि । न नो नूदय याता ॥ लंख
वजिहारासतं ॥ श्रीकलमहाकृष्णालोयनेव

३२ ॥ ॥ अध्याय पूऊनी ॥ ॐ कां कां कां लिखा स्वच्छ
नमहाकृष्ण वायनमः ॥ ३ ॥ आवाहनादि ॥ गाय
त्री ॥ ॐ अध्याय कां ध्याय कां ध्याय मूर्त्ति हूं लिखा
नाथ यवि प्रहं स्वच्छ न्याय सुधीमहि । न नो नूदय
यादया ॥ वजिहारासतं ॥ श्रीकलमहाकृष्णालोयनेव

वया.पू

२२६ तिप्पावन

तन्त्रशास्त्राविधि

१ सं २२८ स्य दयद छ क्रयाच रु छि आदि ल
वालः थ कू क्र या त्र नि छः उ द छ धी यृ शि
ताल्ल य न न न ल ॥ ॥

पुस्तक संख्या १२३४

3015

लायने वं ईश॥ मधुलवाय स्वा ननं॥ ॐ कं ॐ ॐ
नाय २॥ ॐ यं न त्पूत्र वाय २॥ ॐ लं अ धा वाय २॥ १
ॐ वी वा म दे वा य २॥ ॐ लं म धा जा नाय २॥ ॥ जाय
॥ कं स्वा न काय॥ ॐ हां हा म दा नि वा य न म ४॥ ॥ ०॥
नि व मू डा न्द र्ण य ०॥ ॐ हू म ४ अ मृ ती ष्व वा य न म ४॥

१०॥ ॐ हू म ४ अ मृ त ल क्री न म ४॥ ॥ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं
नि स्वा स्व कृ न्द म हा रं न वा य २॥ ॥ ०॥ स्वा ॥ ॐ म
त्र का श्र नं ति॥ ॐ पा पा रु मि ति॥ ॐ अ न यं व र्ण नं ना
मि॥ आ णी च्छे द॥ ॐ न म ४ ण क वा य च॥ ॐ अ य
म्व कं य या॥ ॐ या नं वृ द्धि वा॥ ॥ आत्मा सू क

नै॥ॐ सुस्तिन ॐ न्द्रा॥ॐ यत॥ॐ यददृक्॥स्युनम
ॐ स॥ॐ वृक्षस्य तै॥ ॥ न्यासलिकाय॥ॐ क्रां
हृदयाय तै॥ कंतनै॥ॐ हौं हौं सदा निवाय २॥
ॐ हौं स॥ अमृतीश्वराय २॥ॐ हौं स॥ अमृतलक्ष्मी
२॥ॐ क्रां क्रां क्रां निवास्व कृन्दमहारुं ववाय २

॥ ॥ विद्यादानं कंतनै॥ॐ हौं हौं सदा निवाय वि
द्यादानं ह॥ॐ हौं स॥ अमृतीश्वराय महारुं
ववाय विद्यादानं ह॥ॐ क्रां क्रां क्रां निवास्व
कृन्दमहारुं ववाय विद्यादानं ह॥ कमधुल
सदास्वान्तै॥ॐ नै॥ अमृतीश्वराय २॥ॐ हृतिश्वरुं

धनयशः॥ नासिय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति
विधिः समाप्तः ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ
नित्यकर्म ॥ नासिय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ लीखनशाय ॥ वासा ॥ ॥ वासुदेवाय नमः ॥ ॥

सर्वतः कृतं यत्नं ॥ कान्तिकृतं यत्नं ॥ अथ यत्नः
॥ यत्नं स्यात्सर्वतः कृतं ॥ नाहो यत्नं यत्नं ॥ वा कः
वा यत्नं न ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ यत्नः
आसनं यत्नं ॥ नासिय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सिद्धिः अथ यत्नं ॥ वासा ॥ ॥ वासुदेवाय नमः ॥ ॥

लाकार्त्तं॥स्वातमलुलसर्त्तं॥द्विषाञ्जलि॥ॐ॥
श्रीं स्वाहा॥३॥स्वातमर्त्तं॥ॐ गुर्वव नमः॥ॐ गुर्व
सर्त्तं य नमः॥ॐ यवम गुर्व स्वापाद्रकापूजया
मि॥ॐ यवम श्रीगुर्व स्वापाद्रकापूजयामि॥चन्द्रः
नयूष्यं॥३॥जाप॥ॐ श्रीं स्वाहा॥१०॥ॐ गुर्व रुद्रा

प्रायज्यं समर्पयामि॥साय॥ॐ गुर्व वक्रागुर्व वि
ष्णुगुर्व देवमर्त्तं यवम गुर्व देव उगल सर्वं तस्मै श्री
गुर्व व नमः॥अस्नानान्निमित्रान् च स्वास्नानां ज न
लाक यश्च द्रुमि विर्गय न तस्मै श्रीगुर्व व नमः॥
ॐ यवम गुर्व यवम षिगुर्व पावमाचार्य श्री आदि

दवपाइ कीपूजयामि॥ नमस्काव॥ ॐ तिगुत्र पूजा॥
॥ ॥ स्नानतन॥ वेंक्रोथो ~~सु~~ सो श्री श्री को
जें॥ तनमकुन॥ वलिसे अर्थयात्रसे पुजवसे
खवसे वससे तन॥ चतकायाव न्यासयाया॥ उं
वेंक्रोथो श्री सो॥ तनमकुन कमधुल पूजने॥

आवाहनादि॥ लीख स्वपाल ईधन॥ जयलया॥
॥ १०॥ मकुन गययी॥ धनमूजा न्दर्थयन॥ वेंक्रो
ठिकाय विमरु कूलदीपाय धीमहि ते नो क्रुः
डिप्रयादयात॥ तनमकुन सर्वदयादिसेया
अ आत्मानि वसिसे चयन॥ ॥ ॐ तिकमधुल

पूजा॥ तना अर्थ पाठ पूजा॥ जे अर्थ पाठ सना
 यपादूकी पूजा या मि॥ लीखतें। अर्थ पाठ स॥ जे
 अकांकां हूँ प्रसू ल २ धा २ त २ न २ व २ नू २ वृ २ य २ च २ न
 २ यु २ च २ द २ क २ रु २ व २ म २ द २ म २ द्या २ त २ य २ वि २ द्या २ त २ य
 २ वि २ द्यि २ हूँ ३ रु २ कों ३ श्री २ को ३ मा २ रि २ का ३ वि ३ श्वे २ पा २ दू

कां पूजयामि॥ वाल्मिकि मूद्रानां॥ आत्मनर्मि
चनी॥ नगशयूजनी॥ जैजम्बू॥ आनन्दनकिसेन
वानन्दवीनाधिपनयथी॥ माहाविशाराजेश्व
नी॥ श्री अर्चयात्तुष्टा॥ विकार्यपादकां पू
जयामि॥ उर्वेकां श्रीत्यादि॥ कांददयाः

दि॥ आवाहनादि॥ गजः दधुः गर्जतीः शानिम्
डाः॥ धनम् डान्दण्यं ग॥ अर्घ्यपापं स्त्रितयूषं
गृहीत्वा॥ कक्कम् डीकित्वा॥ हतशुद्धिकात्रेयं
॥ उर्वेकांशं श्रुत्वा॥ श्रुत्वा॥ श्रुत्वा॥ अर्नेनमः
कुशलामनकयति॥ ॐ ह्ययं अर्घ्यपापं निक्षय

[illegible]

साँपादूकाँपूजयामि॥ ॥ नमः पूजनी॥ उँवेँज
शीशीशकिरु नवानुववीनाधिपतय
पादूकाँपूजयामि॥ उँज उँनमाहगुवती
अम्वकुशीरुडिकायधीकाँकाँकाँदू
लललमँ अद्यानामुरवीकाँकिँकीकि

विबुद्धसोखकींशीकाँवेँपादूकाँपूजयामि॥
कीरुलवायपादूकाँपूजयामि॥ कीरुनवी
पादूकाँपूजयामि॥ ॥ सांगलपतिनाथाययाः
दूकाँपूजयामि॥ काँदूपावायपादूकाँपू
जयामि॥ वाँवदूकनाथायपादूकाँपूजयामि

॥ कौं यो गिदी र्या पादू कां पूऊ यामि ॥ अूं वं मा
यली पादू कां पूऊ यामि ॥ कै मा हं ध्वनी पादू कां
पूऊ यामि ॥ चूं को मानी पादू कां पूऊ यामि ॥ तें वे
षूवी पादू कां पूऊ यामि ॥ टें वा ना ही पादू कां पू
ऊ यामि ॥ पें ॐ द्रा यली पादू कां पूऊ यामि ॥ यें

ना मू धु पादू कां पूऊ यामि ॥ सें म हा ले श्री पादू
कां पूऊ यामि ॥ पा दा र्द रु सा र्ध आ वा स स्ना न
उ त न वा र्धे न ॥ श्री कृ ष्ण का द र्धे न म ४ ॥ उ त द्वा
क न चे न्द न मि न्धू ल अ क्त पू र्ण ॥ श्री कृ ष्ण का
द र्धे न म ४ ॥ प्रिया ऊ र्ति ॥ शां ते कौं प्रो र्धु क्षी

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं





























